Brainbox
learn easy

कश्मीर – कश्मीर – Kashmir- जम्मू और कश्मीर ५ अगस्त २०१६ तक भारत का एक राज्य था जिसे अगस्त २०१६ में विभाजित कर जम्मू और कश्मीर एवं लद्दाख नामक दो केंद्र शासित प्रदेश के रूप में स्थापित कर दिया गया।यह राज्य पूर्वतः ब्रिटिश भारत में जम्मू और कश्मीर रियासत नामक शाही रियासत हुआ करता था। इस राज्य का क्षेत्र भारत के विभाजन के बाद से ही भारत, पाकिस्तान और चीन के बीच विवादित रहा है, जिनमे से तीनों ही पूर्व रियासत के विभिन्न हिस्सों पर आज भी नियंत्रण रखते हैं। जम्मू और कश्मीर हिमालय पर्वत श्रृंखला के सबसे ऊँचे हिस्सों में स्थित है, और इसे अपनी प्राकृतिक सौंदर्य एवं संसाधनों के लिए जाना जाता है। साथ ही जम्मू, कश्मीर और लद्दाख का इलाका अपनी विशिष्ट संस्कृति के लिए जाना जाता है। यहाँ स्थित वैष्णो देवी तथा अमरनाथ की गुफाएँ हिंदुओं के अत्यंत महत्वपूर्ण तीर्थ का केंद्र रहा है।

उदास – खिन्न – Sad- जब कोई बात किसी के कहने पर बुरी लग जाती है तो उस वक्त हम उदास हो जाते हैं।

बगीचे – उपवन – Garden. बाग या बगीचा एक नियोजित स्थान है, जो आमतौर पर बाहरी रूप से, प्रदर्शन, खेती, या पौधों और प्राकृतिक मनोरंजन के लिए अलग सेट किया जाता है। बाग प्राकृतिक और मानव निर्मित दोनों प्रकार की सामग्रियों को शामिल कर सकता है। बाग अक्सर झरने , झाड़ियों, फव्वारे, तालाबों, आदि की सुविधा युक्त नियोजित किये जाते हैं। इस तरह के कुछ बाग केवल सजावटी उद्देश्यों के लिए हैं, जबकि अन्य खाद्य फसलों का उत्पादन भी करते हैं। खाद्य उत्पादक उद्यान खेतों से अलग हैं। उनके उद्देश्य छोटे पैमाने पर अर्थात बिक्री के लिए उत्पादन के बजाय एक शौक या आत्म–भरण तक का होता है । ये बगीचे रुचि पैदा करने और आत्मिक शांति व आनंद के लिए विभिन्न ऊंचाइयों, रंगों, बनावट और सुगंधित फूलों के पौधों से युक्त होते हैं। आमतौर पर आज एक आवासीय या सार्वजनिक बाग है, लेकिन उद्यान शब्द पारंपरिक रूप से अधिक सामान्य रहा है। जू ,जो

नकली प्राकृतिक आवासों में जंगली जानवरों को प्रदर्शित करते हैं, पहले जूलॉजिकल गार्डन कहलाते थे ।

चिड़िया – पंछी – Birds दर्जिन चिड़िया, ओर्थोटोमस वंश और सिल्वाइडी (Sylviidae) कुल से संबंधित छोटे आकार के पक्षी (फुदकी) हैं। इनकी कुल नौ प्रजातियां अस्तित्व में हैं। दर्जिन चिड़िया को उसका यह नाम उसकी घोंसला बुनने की खास कला के कारण मिला है। यह चिड़िया अपनी लंबी पतली चोंच से एक पत्ती या कई पत्तियों में छेदों की एक श्रृंखला बनाता है और फिर इन छेद के बीच से पौधों के रेशों, कीटों के रेशम और कभी कभी घरेलू इस्तेमाल के धागों को पिरो कर एक दर्जी की तरह पत्तियों की सिलाई कर इन्हें आपस में जोड़ देते हैं। इन सिली हुई पत्तियों के बीच बनी जगह में फिर घास–पात या रूई इत्यादि बिछाकर एक सुविधाजनक घोंसला तैयार किया जाता है। दर्जिन चिड़ियायें, पुराने विश्व (यूरोप, एशिया और अफ्रीका) और मुख्य रूप से एशिया के उष्णकटिबंधीय भागों में पाई जाती हैं। यह फुदकियां आमतौर पर गहरे रंगों में पाई जाती हैं जिनका ऊपरी हिस्सा हरा या धूसर और निचला हिस्सा पीला या सफेद रंग का होता है। अक्सर इनके सिर का रंग भूरा–लाल होता है। दर्जिन चिड़िया के पंख छोटे और गोलाकार, पूंछ छोटी, पैर मजबूत और चोंच लंबी और घुमावदार होती है। यह फुदकियां अपनी पूंछ को आमतौर पर ऊपर की ओर रखती हैं। यह आमतौर पर खुले जंगलों, मैदानों और उद्यानों में पाई जाती हैं।

पेड़ – वृक्ष – Tree वृक्ष का सामान्य अर्थ ऐसे पौधे से होता है जिसमें शाखाएँ निकली हों, जो कम से कम दो वर्ष तक जीवित रहे, जिससे लकड़ी प्राप्त हो। वृक्ष की एक जड़ होती है जो प्रायः जमीन के अन्दर होती है, तथा जड़ से निकलकर तना तथा पत्तियां हवा में रहते

हैं। यह प्रदूषण कम करने में कारगर सिद्ध हुआ है। पर लकड़ियो तथा जमीन की आवश्यकताओं के कारण लोग इसे काटते जा रहे हैं।

रंग–बिरंगी – चित्तीदार हार्ट–स्पॉटेड कठफोड़वा (हेमीसिर्कस कैनेंटे) कठफोड़वा परिवार में पक्षियों की एक प्रजाति है। उनमें विपरीत रंगों, सफेद तथा काले का संयोजन पाया जाता है,एक नाटे परन्तु सुदृढ़ शरीर के साथ एक ढलुआं आकार का सिर इसे आसानी से पहचाने जाने योग्य बनाते हैं, तथा इनकी नियमित पुकार इन्हें आसनी से खोजे जाने योग्य बनाती है, ये अपृष्ठवंशियों (मुख्यतः कीट) रूपी चारा खोजने के लिए वृक्षों की टहनियों के नीचे तनों पर जाते हैं। वे जोड़े अथवा छोटे समूह में देखे जाते हैं तथा अक्सर चारा खोजता हुआ मिश्रित–प्रजाति का समूह के भाग के रूप में भी दिखाई देते हैं। इनका व्यापक वितरण सम्पूर्ण एशिया में विशेष रूप से दक्षिण–पश्चिमी और मध्य भारत के जंगलों में, जो अपने विस्तार में हिमालय तथा दक्षिण–पूर्व एशिया से अलग होते हैं, पाया जाता है।

ainbox
arn easy

तश्तरी– प्लेट –Plate तश्तरी भारतीय खाना बनाने में इस्तेमाल होनेवाला बर्तन है। यह भी थाली के समान ही होती है। किन्तु यह खाना परोसने के लिए प्रयोग की जाती है।

कागज के बंडल –Bundle of paper पौधों में सेल्यूलोस नामक एक कार्बोहाइड्रेट होता है। पौधों की कोशिकाओं की भित्ति सेल्यूलोज की ही बनी होतीं है। अतः सेल्यूलोस पौधों के

पंजर का मुख्य पदार्थ है। सेल्यूलोस के रेशों को परस्पर जुटाकर एकसम पतली चद्दर के रूप में जो वस्तु बनाई जाती है उसे कागज कहते हैं। कोई भी पौधा या पदार्थ, जिसमें सेल्यूलोस अच्छी मात्रा में हो, कागज बनाने के लिए उपयुक्त हो सकता है। रुई लगभग शुद्ध सेल्यूलोस है, किंतु कागज बनाने में इसका उपयोग नहीं किया जाता क्योंकि यह महँगी होती है और मुख्य रूप से कपड़ा बनाने के काम में आती है। परस्पर जुटकर चद्दर के रूप में हो सकने का गुण सेल्यूलोस के रेशों में ही होता है, इस कारण कागज केवल इसी से बनाया जा सकता है। रेशम और ऊन के रेशों में इस प्रकार परस्पर जुटने का गुण न होने के कारण ये कागज बनाने के काम में नहीं आ सकते। जितना अधिक शुद्ध सेल्यूलोस होता है, कागज भी उतना ही स्वच्छ और सुंदर बनता है। कपड़ों के चिथड़े तथा कागज की रद्दी में लगभग शतप्रतिशत सेल्यूलोस होता है, अतः इनसे कागज सरलता से और अच्छा बनता है। इतिहासज्ञों का ऐसा अनुमान है कि पहला कागज कपड़ों के चिथड़ों से ही चीन में बना था।

आर्ट स्कूल –Art School- कला जहां पर चित्रकारी सिखाई जाती हैं जिसमे विभिन्न तरह के चित्र बनाये जाते हैं।

Brainbox easy

प्रेरणा –संदीपन– Inspiration प्रेरणा व्यवहार की व्याख्या करने के लिए इस्तेमाल एक सैद्धांतिक निर्माण है। यह लोगों की इच्छाओं और जरूरतों के लिए कारणों का प्रतिनिधित्व करता है। प्रेरणा भी व्यवहार करने की दिशा के रूप मे परिभाषित किया जा सकता है। एक मकसद एक निश्चित तरीके से कार्य करने के लिए व्यक्ति को संकेत देता है या कम से कम विशिष्ट व्यवहार के लिए एक झुकाव विकसित करता है। उदाहरण के लिए, जब कोई खाना खा के, अपनी भूख की जरुरत को पूरा करता है, या जब कोई छात्र अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए अपना सारा काम स्कूल में ही कर लेता है। दोनो उदाहरणों में हम क्या करते है और क्यों करते है इस में एक समानता पाई जाती है। मायर और मेयर के अनुसार, प्रेरणा शब्द लोकप्रिय संस्कृति का हिस्सा है जैसे अन्य मनोवैज्ञानिक अवधारणा रहें है।

आत्मविश्वास– आत्मनिष्ठा– Self-confidence- आत्मविश्वास वस्तुतः एक मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति है। आत्मविश्वास से ही विचारों की स्वाधीनता प्राप्त होती है और इसके कारण ही महान कार्यों के सम्पादन में सरलता और सफलता मिलती है। इसी के द्वारा आत्मरक्षा होती है। जो व्यक्ति आत्मविश्वास से ओत–प्रोत है, उसे अपने भविष्य के प्रति किसी प्रकार की चिन्ता नहीं रहती। उसे कोई चिन्ता नहीं सताती। दूसरे व्यक्ति जिन सन्देहों और शंकाओं से दबे रहते हैं, वह उनसे सदैव मुक्त रहता है। यह प्राणी की आंतरिक भावना है। इसके बिना जीवन में सफल होना अनिश्चित है।

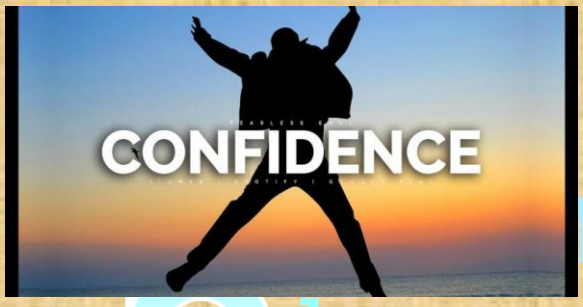

learn easy